HIN3B14b_cours-12-2013-04-23-sociolinguistique-du-Hindi-2

हिन्दी भाषा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

- अगर हम भारत की भाषायी स्थिति पर गौर करें तो पता चलता है कि भारत ही ऐसा देश है जिसमें दुनिया की सबसे ज़्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं।
- भारत के संविधान में बाईस भाषाओं को स्थान मिला है, लेकिन इन भाषाओं की हजारों बोलियाँ हैं, जिनमें लिखित साहित्य नहीं मिलता।
- भारत में अनेक परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन बोलनेवालों की संख्या की दृष्टि से इनमें चार परिवार ही प्रमुख हैं।
- भारत में कोई भी ऐसा शहर या गाँव नहीं है जहाँ सिर्फ एक ही भाषा या बोली बोली जाती हो। कुछ शहरों में एक ही भाषा की विविध बोलियाँ बोली जाती हैं तो कुछ बड़े शहरों में कई परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं।
- जिन शहरों में एक ही भाषा की अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं वहाँ प्रमुख भाषा और किसी एक बोली के बीच डायग्लोसिया[1] की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसा कई राजनीतिक और ऐतिहासिक कारणों से होता है। डायग्लोसिया की स्थिति में वक्ता बोलते समय भाषा और बोली में से अपनी ज़रूरत के मुताबिक तथा स्थिति के अनुकूल किसी एक कोड का चयन करता है। हिन्दी ↔ ब्रज, हिन्दी ↔ भोजपुरी, हिन्दी ↔ अवधी, हिन्दी ↔ बुन्देली, हिन्दी ↔ राजस्थानी, आदि।
- किन्ही भौगोलिक कारणों से दो बोलियों के बीच भी डायग्लोसिया की स्थिति पैदा हो जाती। दरअसल दो बोलियों में से किसी एक बोली को ऊँचे दर्जे की बोली माना जाता है इसलिए बोलने वाले की कोशिश ऊँचे दर्जे की बोली बोलने की होती है, लेकिन दूसरे संदर्भों में वह दूसरी बोली को भी बोलता रहता है। ऐसा वह किसी कोड के अलग-अलग सामाजिक प्रकार्यों (fonctions sociales distinctes) की वजह से करता है।
- जिन महानगरों में एक से ज़्यादा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं वहाँ वक्ता द्वारा अपनी मूल भाषा के संरक्षण की स्थिति पैदा होती है।

---

[1] **La diglossie** désigne l'état dans lequel se trouvent deux variétés linguistiques coexistant sur un territoire donné et ayant, pour des motifs historiques et politiques, des statuts et des fonctions sociales distinctes, l'une étant représentée comme supérieure et l'autre inférieure au sein de la population. Les deux variétés peuvent être des dialectes d'une même langue ou bien appartenir à deux langues différentes.

द्विभाषिकता (bilinguisme) या बहुभाषिकता (multilinguisme)

- भारत में हर जगह द्विभाषी (bilingue) या बहुभाषी (multilingue) समाज हैं। कुछ विद्वान द्विभाषिकता या बहुभाषिकता के खिलाफ हैं। उनके तर्क निम्नलिखित हैं -
  - बहुभाषिकता राष्ट्र की एकता में बाधक हो सकती है क्योंकि अलग-अलग भाषाएँ बोलने वालों के राजनीतिक दल बन जाते हैं जो आगे चलकर एक देश की एकता के लिए खतरा बनते हैं।
  - द्विभाषिकता बालक की शिक्षा और उन्नति में बाधक होती है।

    1. कुछ विद्वान मानते हैं कि द्विभाषी छात्र अपनी पढ़ाई में पीछे रह जाते हैं। इसकी वजह यह है कि द्विभाषी छात्र को दुगुनी मेहनत करनी पड़ती है

    2. द्विभाषी छात्र को अपनी सामाजिक अस्मिता (identité sociale), सांस्कृतिक अस्मिता (identité culturelle) और भाषिक अस्मिता (identité linguistique) की तलाश करनी पड़ती है। भिन्न अस्मिताओं के बीच तालमेल बैठाना पड़ता है। इस कारण उसे अपने खंडित व्यक्तित्व (personnalité brisée, cassée) का एहसास होता है।

(क) एकभाषिकता (monolinguisme) ↔ एक सांस्कृतिकता (monoculturisme)
(ख) एकभाषिकता (monolinguisme) ↔ द्वि-सांस्कृतिकता (biculturisme)
(ग) द्विभाषिकता (bilinguisme) ↔ एक सांस्कृतिकता (monoculturisme)
(घ) द्विभाषिकता (bilinguisme) ↔ द्वि-सांस्कृतिकता (biculturisme)

- द्विभाषिकता मानव की सर्जनात्मक शक्ति को सीमित करती है।
  1. आज तक कोई भी भाषावैज्ञानिक सर्जनात्मक लेखन नहीं कर पाया है
  2. कोई भी महान लेखक द्विभाषी नहीं रहे ... ???

     सैमुअल बेकेट (फ़्रेंच + अंग्रेजी), हाइने (फ़्रेंच + जर्मन)
     काफ़्का (चेक + जर्मन + यीडिस), नोबोकोव (रूसी + फ़्रेंच + जर्मन + अंग्रेजी)
     तुलसीदास (अवधी + ब्रज)
     रवीन्द्रनाथ टैगोर (बंगला + अंग्रेज़ी)
  3. द्विभाषिकता किसी सामाजिक संस्था की बौद्धिक प्रतिभा को नष्ट करती है

► यह भी कहा जाता है कि द्विभाषिकता मानव-संप्रेषण की सामान्य स्थिति नहीं है। हालाँकि यह बात कई मायनों में सही है कि संप्रेषण की यह स्थिति अजीब होती है क्योंकि बोलने वाले को सही कोड का चयन करना पड़ता है। यही कारण है कि हिन्दी जैसी भाषाओं में कोड-मिश्रण (code-mixing, mixage de code) तथा कोड-परिवर्तन (code switching = changement de code?) की स्थिति बनती है। मुंबई में यह स्थिति बहुत देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए एक गुजराती दुकानदार अपने परिवार में गुजराती बोलता है, नौकरों से और सब्जी बाजार में मराठी बोलता है, दूधवाले से तथा स्टेशन के प्लेटफार्म पर हिन्दी बोलता है और मिर्च-मसाले के बाजार में कच्छी और कोंकणी बोलता है। लेकिन इन सभी स्थितियों में अगर किसी पढ़े-लिखे आदमी से बात करनी होती है तो वह अंग्रेजी बोलता है। कोड-परिवर्तन का एक उदाहरण देखें -

French – Tamil (Code-mixing et code switching)

Selvamani: Parce que n'importe quand quand j'enregistre ma voix ça l'aire d'un garçon.

Alors, TSÉ, je me ferrai pas poigné [rire]

Selvamani: *ennatā, ennatā, enna romba ciritā?* ([en Tamoul]

Alors, qu'est-ce que je disais? [en Français]

हिन्दी में भी अंग्रेजी के साथ कोड परिवर्तन और कोड मिश्रण की स्थिति हमेशा बनती है। यही नहीं ऐसा बोलियों के साथ भी होता है। यहाँ तक कि हिन्दी साहित्य में भी इस परंपरा के उदाहरण मिलते हैं। यहाँ हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए –

► भारत की हर प्रमुख भाषा ही संपर्क भाषा है, लेकिन अंतरक्षेत्रीय स्तर पर हिन्दी और अंग्रेज़ी ज़्यादा उपयोगी हैं।

► भारतीय द्विभाषिकता संप्रेषण की आवश्यकताओं से ही नहीं बल्कि सामाजिक संस्थाओं से भी समर्थित है।

► द्विभाषिकता के कारण कोई भाषायी लक्षण दो भिन्न परिवार की भाषाओं को भी प्रभावित करता है जिससे एक भाषायी क्षेत्र का निर्माण होता है। यही कारण है कि भारत में भाषिक क्षेत्रों का निर्माण हुआ है।